© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 08 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

समकालीन सामाजिक एवं राजनैतिक पृष्ठभूमि पर भारती जी के विचार : एक अध्ययन

शोधकर्ता : रोहताश

सामाजिक पृष्ठभूमि और भारती :वस्तुतः समाज से लेखक, लेखक से साहित्य और साहित्य में पुनः समाजविकसित होता है तथा मूल्यों का विकास समाज में ही होता है, क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसीलिए मनुष्य की प्रतिभा का स्त्रोात और क्षेत्र समाज से ही प्रारम्भ होता है। सामाजिक संरचना एक निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया है अतः यह स्वाभाविकहै कि कोई भी समाज स्थिर नहीं रह सकता है।

अज्ञेय ने ठीक ही कहा है–ये सांस्कृतिक मूल्य सामाजिक मूल्य होते हैं और हमारे चेतना सम्पन्न जीवन को विस्तार देते हैं। व्यक्ति समाज में ही रहकर इन मूल्यों को ग्रहण करता है और समाज में ही युगानुरूप इन सांस्कृतिक मूल्यों में विकासऔर बदलाव होता रहता है। संस्कृति पहले भारतीय परम्परा में ध्र्माश्रित थी, लेकिन उन्नीसवीं शती से क्रमशः स्पष्टतर होती हुई सामाजिक शक्तियों के घात–प्रतिघात मेंजब भारतीय सामाजिक आचरण के मानदण्ड लौकिक अथवा मानवीय आधरों पर बनने लगे तब उसकी संस्कृति लौकिक आधरों पर आश्रित जीवन–परिपाटी बन गयी। भारतीय संस्कृति के आधर पर यहाँ जिस समाज का संगठन किया गया था उसमें वर्णाश्रम ध्र्म की स्थापना करते हुए यहाँ के ट्टषियों एवं मनीषियों ने उसे इतना सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित बनाने की चेष्टा की थी कि जिससे मनुष्यों को किसीप्रकार के संकटों का सामना न करना पड़े और सभी सुख पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें।फ्परम्परा और परिस्थिति की पृष्ठभूमि में उसकी वह अदम्य जिजीविषासक्रिय रूप में प्रतिपफलित होती है किन्तु यह प्रक्रिया निरर्थक या यान्त्रिाक नहीं है, वहसार्थक है और लक्ष्ययुक्त है। उसका लक्ष्य अपने अस्तित्व और चेतना की ऊपरी परतोंके नीचे बहुत गहरे में निहित अपने वास्तविक भाव को खोजना, खोजकर अपनीअगणित वा"य प्रक्रियाओं, आचरणों और सामाजिक सम्बन्धें में उससे तादात्म्य स्थापितकरना और अपने समस्त जीवन व्यपार में निरन्तर यह प्रयाास करना कि आत्मोपलब्धिके इस सत्य का एक अंश, जिस पर उसकी खोज, उसकी विजय, उसकी महत्ता कीछाप हैऋ ऐसा एक अंश वह किसी न किसी रूप में प्रवाहमान सामाजिक जीवन को देजाय।

Note :For Complete paper/article please contact us info@jrps.in
Please don't forget to mention reference number , volume number, issue number, name of the authors and title of the paper